Vol. 06, Issue 06, June: 2018
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

कन्नड़ का प्रथम मौलिक उपन्यास - 'इंदिराबाई'

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrhs.net.v6.i6.1

डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. बी. कला एवं के. सी. पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर
कर्नाटक

शोध सार:

भारतीय साहित्य के इतिहास में 'उपन्यास' एक प्रमुख विधा है। कन्नड़ में उपन्यास के लिए 'कादंबरी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। कन्नड़ का प्रथम मौलिक उपन्यास गुळवाड़ी (गुलवाड़ी) वेंकटराय द्वारा विरचित 'इंदिराबाई' है। इसे 'सद्धर्म विजयवु' भी कहा जाता है। यह कन्नड़ का प्रथम सामाजिक उपन्यास है। इसका प्रथम प्रकाशन मंगलौर के 'बासेल मिशेन प्रेस' के द्वारा सन् 1899 ई. में किया गया था। यह कन्नड़ का प्रथम उपन्यास होने के कारण कन्नड़ उपन्यास साहित्य में इसका विशेष स्थान रहा है। इसमें प्रमुखतः तत्कालीन समय के कुरीतियों, विधवा विवाह तथा स्त्री शिक्ष पर अधिक बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति से प्रभावित युवकों का चित्रण किया गया है।

बीज शब्द: उपन्यास, कादंबरी, स्त्री शिक्षा, रुढ़ियाँ, अंधविश्वास ।

मूल आलेख:

भारत बहुभाषिक देश है। यहाँ हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, सिंधी, पंजाबी आदि विभिन्न भाषाओं में रचित समृद्ध साहित्य मिलता है। भारत में लगभग सभी भाषाओं में आधुनिक युग का सूत्रपात सन् 1857 ई. के स्वतंत्र संघर्ष के आस-पास ही होता है। यही वह समय है जब भारतीय भाषाओं में उपन्यास लिखे जा रहे थे और यह विधा बहुत ही कम समय में लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थी। उपन्यास वास्तव में साहित्य की नवीनतम विधा होने के कारण भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में इसका नामकरण एक नवीन शब्दों द्वारा किया गया। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का विचार है कि -"उपन्यास भारत तथा विदेश दोनों में ही आधुनिक युग की उपलब्धि है एवं उसका आगमन भी नवीन युग के आगमन का सूचक है।"[1] कन्नड़ साहित्य भी इससे अछूता न रहा। पाश्चात्य साहित्य के साथ-साथ बंगला तथा मराठी उपन्यासों से प्रभावित होकर अनुवाद के माध्यम से कन्नड़ साहित्य में उपन्यास का प्रवेश हो गया।

आज कन्नड़ साहित्य में उपन्यास एक लोकप्रिय विधा बन चुकी है। कन्नड़ में उपन्यास के लिए 'कादंबरी' कहा जाता है। कन्नड़ उपन्यास साहित्य के प्रवर्तक श्री 'गुल्वाड़ी वेंकटराय' को माना जाता है। इन्होंने सन् 1899 ई. में 'इंदिराबाई' शीर्षक से उपन्यास की रचना की। इसे 'सद्धर्म विजयवु' नामक और एक शीर्षक से भी जाना जाता है। मंगलुर के 'बासेल मिशन प्रेस' द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास कन्नड़ का प्रथम सामाजिक मौलिक उपन्यास है। कन्नड़ साहित्य कोश में राजप्पा दलवायी लिखते हैं कि "गुलवाड़ी कन्नड़ के पहले उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं।"[2] जी. एस. आमूर लिखते हैं कि "गुलवाड़ी वेंकटराय का इंदिराबाई (1899) हमारा प्रप्रथम मौलिक उपन्यास है।"[3] डॉ. हरिकृष्ण भरण्य लिखते हैं कि "1899 में प्रकाशित गुलवाड़ी वेंकटराय का 'इंदिराबाई या सद्धर्म विजयवु'

Vol. 06, Issue 06, June: 2018
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

को कन्नड़ का प्रप्रथम स्वतंत्र सामाजिक उपन्यास के रूप में स्वीकारा गया है।"[4] इसलिए इस उपन्यास का कन्नड़ साहित्य में विशेष महत्व रहा है। इसमें अंग्रेजी शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता-वेशभूषा आदि आधुनिक विचारों से प्रभावित युवकों का चित्रण किया गया है। अमृतराय तथा भास्कर जैसे पात्रों का चित्रण कर रचनाकार ने जीवन परामर्श, विश्वदृष्टि, स्वतंत्र वैचारिकता, तर्क-वितर्क, मानवीयता, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, स्त्री स्वतंत्रता तथा स्त्री शिक्षा जैसे आधुनिक बिन्दुओं पर विचार-विमर्श किया है। विधवा विवाह को समर्थन देकर बाल्य विवाह, सति प्रथा, वर्ण व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक रूढियों तथा कुरीतियों का खुलकर विरोध किया गया है। यह नायिका प्रधान उपन्यास है। उपन्यास की नायिका 'इंदिराबाई' है। लेखक ने इंदिराबाई के द्वारा तत्कालीन समाज की रूढ़ियों, रीति-रिवाज़ों का विरोध किया है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि कमलपुर नामक छोटे शहर की जीवन शैली पर आधारित है। इसमें सारस्वत ब्राह्मण समाज का चित्रण किया गया है। पुनर्मुद्रित संस्करण की भूमिका में कन्नड़ के प्रसिद्ध लेखक शिवराम कारंत लिखते हैं कि "श्री वेंकटराय ने 'इंदिरबाई' में जिस समाज को दिखाया है, वह उनका अपना सारस्वत ब्राह्मण समाज है। उन्होंने इस लेख में उस समय घटी घटनाओं पर ध्यान देकर सारस्वत समाज की परेशानियों को दिखाया है, जो आज की सामाजिक क्रांति का निशाना था। पिछली सदी में समुद्र पार करके विदेश जाने वालों को जाति से बहिष्कृत किया जाता था। ऐसी ही एक सच्ची घटना को इस उपन्यास की कथावस्तु में शामिल है।"[5] लेखक ने कथा को विस्तार देने के लिए कई चरित्रों की सृष्टि की है, जो मुख्य चरित्र के विकास में योगदान देते हैं। उपन्यास को प्रमुख रूप से अंबाबाई - भीमराय, सुन्दरराय, विठ्ठलराय अमृतराय - जलजाक्षी, भास्कर तथा इंदिरा के पात्रों और घटनाओं के साथ वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत की है। कथानक की शुरूआत भीमराय और अंबाबाई के वैवाहिक जीवन से होती है। उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए भूमिक में स्वयं लेखक लिखते हैं कि "इसका उद्देश्य सत्य और हृदय का सामंजस्य स्थापित करना है। हमारा सभी प्रयास केवल इसी दिशा में केंद्रित है।"[6]

भीमराय ने बचपन से गरीबी के दिन देखे थे। जैसे-तैसे थोड़ी बहुत शिक्षा प्राप्त करके नरसिंहशास्त्री के यहाँ लेखाकार का कार्य करता था। भीमराय का विवाह अंबाबाई से होते ही भीमराय का भाग्य खुल गया। भीमराय के लिए अंबाबाई का घर में प्रवेश करना जैसे धन दौलत के साथ लक्ष्मी का प्रवेश करना था। भीमराय को अब अंबाबाई की हर एक बात सही लगने लगती थी, चाहे वह गलत भी क्यों न हो। दिन गुजरते गये, तो भीमराय एक रीढ़ विहीन कायर पुरुष बनता गया जिसे अंबाबाई अपनी उँगलियों पर नचाती है। अंबाबाई तेज स्वभाव की है साथ ही धर्मभीरु भी। दोनों पारंपरिक दृष्टिवाले दंपति है, जो धर्म और उसके रूढ़ियों पर अंधश्रद्धा रखते हैं। उपन्यास के प्रारंभ में ईर्ष्यावश सुंदरराय को खाने में विष मिलाकर मार डालने का प्रसंग तत्कालीन समाज में चल रही छल कपट नीति को व्यक्त करता है। भीमराय कानून से बचने के लिए पुलिस अफसर को घर बुलाकर खिला - पिलाकर चाँदी और पैसों से खुश करता है। यह उस समय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय और रिश्वतखोरी का खुलासा करता है। उपन्यास में ऐसे कई प्रसंग आते हैं जो यथार्थ के साथ-साथ प्रासंगिक भी हैं।

उपन्यास की नायिका 'इंदिरा' भीमराय तथा अंबाबाई की पुत्री है। अल्पायु में ही इंदिरा का विवाह करना बाल विवाह जैसी कुप्रथा का परिचायक है। इंदिरा का पति विठ्ठलराय अपनी तृष्णा मिटाने के लिए बाजारू स्त्रियों को लेकर सारी संपत्ति उन स्त्रियों पर लुटा देना, उनके साथ ऐशो-आराम का जीवन व्यापन करना, उनके लिए अलग से बंगले बनाकर देना आदि तत्कालीन समाज में व्याप्त पुरुष वर्चस्व को दर्शाता है। ज्वर के ताप से पीड़ित विठ्ठलराय का उचित समय पर डॉक्टरी इलाज न हो पाने से अकाल मृत्यु होती है।

Vol. 06, Issue 06, June: 2018
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

जड़ीबूटी, टोना-टोटका तथा स्वर्णदान जैसे घरेलू उपचार समाज में घर बनाए हुए अंधविश्वास के प्रभुत्व को प्रकट करते हैं।

पति की मृत्यु के कारण बाल विधवा हुई इंदिरा को नैतिकता तथा धर्म के नाम पर लालची तथा लंपट दूराचारी साधू मंड़ली को सौंप देना भीमराय और अंबाबाई के विवेक हीनता और रूढ़िवादिता का प्रभावी चित्र प्रस्तुत करता है। दूसरी ओर विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग और स्वाभिमान को बनाए रखनेवाली इंदिरा का अपनी रक्षा के लिए घर से पलायन करना उसके संघर्षशील व्यक्तित्व का परिचय देता है, जो बाद में उसकी शिक्षा ग्रहण करने में प्रकट होता है।

इंदिरा बाल विधवा होने पर अंबाबाई उसको वैधव्य का पालन करने के लिए आग्रह करती है। वह कहती है कि "तुम्हें न बाल बनाना है, न संपूर्ण परिधानों को पहनना है, न सिर में तेल लगाना है।"[7] उसका प्रतिदिन बाल न बनाना, घर से बाहर न निकलना, अच्छे कपड़ो को न पहनना आदि तत्कालीन रीति-रिवाज़ों को इंदिरा के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। उसे केवल भगवद् भक्ति में लीन रहने के लिए कहती है। जब वह अपनी सहेली शारदा से 'नीतिकथा' की किताबें लाकर पढ़ने लगती है, तो उसका भी विरोध करती है। कहती है कि "तुम इन किताबों को क्यों पढ़ती हो? इन किताबों को पढ़ने से तुम्हें क्या लाभ मिलता है? और आगे कहती है कि ऐसी ईसाइयों द्वारा लिखित किताबों को पढ़कर कई लोगों ने अपना धर्म भ्रष्ट कर लिया है।"[8] इसके अतिरिक्त उपन्यास में यह भी दर्शाया गया है कि पारंपरिक दृष्टिकोन रखने वाले भीमराय कहीं न कहीं इन कुरीतियों का विरोधी भी है। विठ्ठलराय की मृत्यु के तुरंत बाद पंडित ने भीमराय के सम्मुख इंदिरा का बालमुंडन करने एवं सतिप्रथा का पालन करने का प्रस्ताव रखा। पर भीमराय बहाना बनाकर टाल देता है।

उपन्यास में अमृतराय के रूप में एक प्रगतिशील पात्र की रचना लेखक ने की है, जो पेश से वकील और सामाजिक कुरीतियों का सच्चा विरोधी है। वह मृत सुंदरराय का पुत्र भास्कर को आश्रय देता है। शिक्षा हेतु विलायत भेजता है और इंदिरा जब संत मंडली से बचते हुए अमृतराय के शरण में आती है, तो उसे भी आश्रय देता है। इंदिरा को शिक्षा दिलाने सातारा (महाराष्ट्र) को भेजता है। अमृतराय उपन्यास का ऐसा पात्र है, जो घटनाओं को नवीन मोड़ देता है। उसके माध्यम से लेखक ने तत्कालीन मध्यवर्गीय प्रगति चेतना को स्वर दिया है। उपन्यास के अंत में बाल विधवा इंदिरा का पुनर्विवाह भास्कर से रचाकर लेखक ने समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकता को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। इससे ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि से किये जा रहे समाज सुधार आंदोलन से धीरे-धीरे प्रभावित हो रहा था।

उपन्यास की भाषा पर विचार करें, तो यह कह सकते हैं कि रचनाकार दक्षिण कर्नाटकी होने के कारण उपन्यास की भाषा में दक्षिण कन्नड़ की झलक पाई जाती है। रचनाकार ने यहाँ-वहाँ स्थानीय भाषा कोंकणी तथा तुलु शब्दों का प्रयोग किया है। उपन्यास की कथावस्तु तत्कालीन समाज की वास्तविकता को चित्रित करती है। इसके साथ ही दक्षिण कन्नड़ की परंपरागत नाट्य कला यक्षगान का स्थान-स्थान पर उल्लेख मिलाता है। भाषा में जीवंतता लाने के लिए लोकोक्तियाँ एवं मुहावरों का प्रयोग किया गया है। अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित युवकों की भाषा में सहजता लाने के लिए अंग्रेजी वाक्य संरचना तथा शब्दों का प्रयोग भी किया है।

यह उपन्यास समाज सुधार और उपदेश, तत्कालीन समाज की वास्तविकता को दर्शाता है। कह सकते हैं कि रचनाकार कहीं न कहीं राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे सामाजिक आंदोलनों से प्रभावित थे। इससे वे समाज व्यवस्था की जड़ता

Vol. 06, Issue 06, June: 2018
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

और अवैज्ञानिकता का विरोध करते हैं। इस उपन्यास में चित्रित कई प्रसंग आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. शैलबाला, हिन्दी उपन्यास का प्रारंभिक विकास, सत्य सदन, सरावगी बाराबांकी, प्रथम संस्करण-1973, पृ. सं- 11
2. सं- राजप्पा दलवायी, कन्नड़ साहित्य कोश, दलवायी प्रकाशन, अध्यापक निवास, ज्ञानभारती, बेंगलौर विश्वविद्यालय, बेंगलौर-56, सातवां संस्करण-2010, पृ. सं- 102
3. जी. एस. आमूर, कन्नड़ कथन साहित्य: कादंबरी, श्रीहरी प्रकाशन, भारती, नवोदयनगर, धारवाड़-03, पृ. सं -24
4. डॉ. हरिकृष्ण भरण्य, होसगन्नड़ साहित्यद उगम मत्तु विकास, प्रभास बिडुगड़े, मदुरै-21, प्रथम संस्करण-1990, पृ.सं- 56
5. गुलवाड़ी वेंकटराय, इंदिराबाई, कन्नड़ प्रपंच प्रकाशन, कदरी, मंगलौर-2, पुनर्मुद्रित संस्करण-1962, पृ. सं - vi
6. वही, पृ सं - iv
7. वही, पृ. सं - 152
8. वही, पृ. सं - 153

ISSN. 2347-5404
IJRHS
ESTD.2013